<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

इरेडा के सीएमडी का इंडिया एनर्जी वीक 2026 में एकीकृत ऊर्जा परिवर्तन का आह्वान



गोवा, 28 जनवरी 2026

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री प्रदीप कुमार दास ने आज गोवा में आयोजित इंडिया एनर्जी वीक 2026 के दौरान "नेट ज़ीरो उत्सर्जन: पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव – परिवर्तन में तेल और जैव ईंधनों की भूमिका" विषय पर एक परिचर्चा में भाग लिया।

भारत की स्वच्छ ऊर्जा में तीव्र प्रगति को रेखांकित करते हुए, श्री दास ने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा के साथ-साथ वैकल्पिक एवं कम-कार्बन ईंधनों का विस्तार पहले से ही उल्लेखनीय परिणाम दे रहा है। एथेनॉल ब्लेंडिंग जैसे कार्यक्रम आयात पर निर्भरता कम कर रहे हैं, उत्सर्जन घटा रहे हैं और ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ कर रहे हैं, जिससे देश सामूहिक रूप से 'विकसित भारत' की ओर अग्रसर हो रहा है। उन्होंने जोर दिया कि यह एकीकृत दृष्टिकोण वर्ष 2070 तक नेट ज़ीरो हासिल करने की भारत की विकास-प्रथम रणनीति तथा वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता स्थापित करने की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। भारत में प्रति व्यक्ति विद्युत खपत अभी भी वैश्विक औसत के एक-तिहाई से कम होने का उल्लेख करते हुए उन्होंने चरणबद्ध, यथार्थवादी और विकास-अनुकूल संक्रमण की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री दास ने कहा कि परिवहन, पेट्रोकेमिकल्स और उद्योगों में ऊर्जा सुरक्षा और मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए तेल और गैस इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जैव ईंधन, मौजूदा अवसंरचना का उपयोग करते हुए, ग्रामीण आजीविका को समर्थन प्रदान करने के साथ-साथ डी-कार्बनाइजेशन का एक स्केलेबल मार्ग प्रस्तुत करते हैं।





उन्होंने रेखांकित किया कि भारत का स्वच्छ ऊर्जा विस्तार विश्व की सबसे बड़ी राष्ट्र-निर्माण अवसरों में से एक है, जोकि इंजीनियरों, वित्तपोषक विशेषज्ञों, डेटा विशेषज्ञों और परियोजना प्रबंधकों की मांग सृजन कर रहा है। पुनः कौशल विकास (री-स्किलिंग) और सशक्त घरेलू विनिर्माण द्वारा समर्थित एक न्यायसंगत और किफायती परिवर्तन , सामाजिक लाभों को और अधिकतम करने की कुंजी होगा।

अपने निष्कर्ष में श्री दास ने कहा कि , "तेल, गैस और जैव ईंधन बाधा नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित परिवर्तन के सक्षमकर्ता हैं। इरेडा यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि भारत की जलवायु महत्वाकांक्षा को सुलभ और किफायती हरित वित्तपोषण का समर्थन मिले।"

इरेडा के सीएमडी ने "ग्लोबल ग्रीन हाइड्रोजन और उसके डेरिवेटिव्स की ऑफटेक" विषय पर आयोजित सीईओ राउंडटेबल में भी भाग लिया और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत के हरित हाइड्रोजन और अमोनिया बाजारों को तीव्र गति और बड़े पैमाने पर विकसित करने के लिए स्केलेबल वित्तपोषण और समन्वित नीतिगत समर्थन अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि सशक्त नीतिगत समर्थन से समर्थित गति और कौशल, भारत को ना केवल एक प्रमुख हरित हाइड्रोजन विनिर्माण केंद्र बना सकता है, बल्कि एक महत्वपूर्ण निर्यात केंद्र के रूप में भी स्थापित कर सकता है।